The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पर्युषण पर्व का महत्व – जैनकल्पसूत्र के संदर्भ में

दीपिका शर्मा

शोधार्थी, सर्वदर्शनविभाग:, कुमारभास्करवर्मासंस्कृतपुरातनाध्ययनविश्वविद्यालय: नलवारी (असम)

Email id- sarmamomi1998@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17326568

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

जैन, कल्पसूत्र, पर्युषण, पर्व।

ABSTRACT

भारतीय धार्मिक परंपराओं में पर्वों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जिनमें जैन धर्म के पर्व विशेष रूप से आत्मशुद्धि,तप,संयम और क्षमा की भावना को प्रकट करते हैं। जैन धर्म एक प्राचीन और गूढ़ दर्शन है जिसका मूल उद्देश्य आत्मा की मुक्ति और मोक्ष है। जैन धर्म में अनेक पर्व मनाए जाते है, जिनमें पर्युषण पर्व का विशेष महत्व है। यह पर्व न केवल धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा है, बल्कि आत्मशोधन, ध्यान, तपस्या और धार्मिक अनुशासन का उत्सव है। इस पर्व का विस्तृत वर्णन जैन धर्म के प्राचीन ग्रंथ कल्पसूत्र में मिलता है। कल्पसूत्र आचार्य भद्रबाहु द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण आगम है, जो विशेष रूप से पर्युषण पर्व के अवसर पर श्वेताम्बर सम्प्रदाय में पढ़ा जाता है। इस शोध पत्र में पर्युषण पर्व के महत्व पर विश्लेषण किया गया है।

कल्पसूत्र का संक्षिप्त परिचय:

कल्पसूत्र जैन धर्म के श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ को आचार्य भद्रबाहु ने प्राकृत भाषा में लिखा था। परंपरागत रूप से कहा जाता है कि इसे महावीर के निर्वाण ५९९-५२७ ईसा पूर्व के लगभग एक सौ पचास साल बाद लिखा गया था। श्वेताम्बर सम्प्रदाय से संबंधित जैन साहित्यिक संग्रह के छह खंडों में से इसे छेद सूत्रों में से एक माना जाता है। इस ग्रंथ के तीन मुख्य भाग है, जिनमें से प्रत्येक जैन परम्परा के एक मूलभूत पहलु से संबंधित है –

१. जिन चरित्र में चौबीस जिनों में से चार के जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है।

२. स्थविरावली, कल मर्यादा में स्वयं स्थिर रहने और अपने गण के साधु वर्ग को स्थिर रखने वाले ज्ञान एवं चारित्र गुणों में श्रेष्ठ स्थविरों का परिचय तथा उनकी परंपरा दी गई है।

३. सामचारी में वर्षा ऋतु की विशेष अवधि के दौरान मठवासी जीवन के लिए नियम दिए गए हैं।

कल्पसूत्र का पाठ पर्युषण पर्व के समय जैन साधु – साध्वी करते है। इस ग्रंथ का बहुत अधिक आध्यात्मिक महत्व है इसलिए केवल साधु एवं साध्वी ही इस का वाचन करते हैं तथा हृदयंगम करते हैं।

पर्युषण पर्व का स्वरूप और उद्देश्य:

जैन धर्म की दृष्टि से पर्वों में पर्युषण पर्व का सर्वाधिक स्थान है। इस पर्व को पर्वाधिराज,सर्वपर्वशिरोमणि या महापर्व भी कहा गया है। पर्युषण का शाब्दिक अर्थ है – परि- चारों ओर से सिपटकर,वसन- एक स्थान पर निवास करना या स्वयं में वास करना। परि उपसर्ग और उष् धातु दहन अर्थ का भी सूचक है। अर्थात् सम्पूर्ण रूप से दग्ध करना अथवा जलाना। इस पर्व में साधना एवं तपश्चर्या के द्वारा कार्यरूपी मल को जलाया जाता है। पर्युषण पर्व की आराधना का सम्बन्ध भौतिक पर्यावरण से भी है। पृथ्वी के भौतिक वातावरण में आये परिवर्तन के कारण भी यह पर्व मनाया जाता है।

पर्युषण मूलतः प्राकृत भाषा का पज्जुसणा शब्द है। प्राकृत में इस प्रकार के दो शब्द मिलते हैं –

पज्जुसणा – पर्युषणा

पज्जोसमणा- पर्युषशमना

पर्युषण पर्व जैन संसार का महापर्व है। जैन धर्मावलंबी भाद्रपद मास में पर्यूषण पर्व मनाते हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के पर्यूषण पर्व ८ दिन चलते हैं। ८ वें दिन जैन धर्म के लोगों का महत्वपूर्ण त्यौहार संवत्सरी पर्व मनाया जाता है। इस दिन यथा शक्ति उपवास रखा जाता है। पर्यूषण पर्व की समाप्ति पर संवत्सरी(क्षमायाचना) पर्व मनाया जाता है। दिगम्बर संप्रदाय वाले १० दिन तक मनाते है जिसे वो दशलक्षण धर्म के नाम से जाना जाता है। जैन धर्म के दस लक्षण इस प्रकार है – उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम अकिंचन्य, उत्तम ब्रह्मचर्य । इन दस लक्षणों को पावन करने से संसार से मुक्ति मिलती है। इन दिनों में क्षमा, शांति,तप तथा त्याग की पवित्र गंगा का महास्त्रोत जन जीवन को पावन एवं शीतल करता हुआ वहता है।पर्यूषण पर्व मनाने का मूल उद्देश्य आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए आवश्यक उपक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना होता है। पर्यावरण का शोधन इसके लिए वांछनीय माना जाता है। आत्मा को पर्यावरण के प्रति तटस्थ या वीतराग बनाए बिना शुद्ध स्वरूप प्रदान करना संभव नहीं है। इस दृष्टि से'कल्पसूत्र' का वाचन और विवेचन किया

जाता है और संत-मुनियों और विद्वानों के सान्निध्य में स्वाध्याय किया जाता है।पूजा, अर्चना, प्रतिक्रमण, सामायिक समागम, त्याग, तपस्या, उपवास में अधिक से अधिक समय व्यतीत किया जाता है और दैनिक व्यावसायिक तथा सावद्य क्रियाओं से दूर रहने का प्रयास किया जाता है। संयम और विवेक का प्रयोग करने का अभ्यास चलता रहता है।

कल्पसूत्र में पर्युषण पर्व का महत्व:

१. **भगवान महावीर का जीवन आदर्श** –

कल्पसूत्र में महावीर की जीवन गाथा विस्तृत रूप से विवरण किया गया है। पर्युषण के समय इस जीवनी का श्रवण, आत्मा के वैराग्य भाव को प्रवर करता है। महावीर स्वामी के जन्म, दीक्षा,तप और केवल ज्ञान प्राप्ति के प्रसंग व्यक्ति को आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान करते है।

२. **धार्मिक अनुशासन और आत्मसंयम** -

कल्पसूत्र में पर्युषण को संयम और तप का पर्व बताया गया है। इसमें साधुओं के कठोर आचरण, नियमों और तपस्याओं का वर्णन किया गया है, जो श्रावकों को भी आत्मनियंत्रण का मार्ग दिखाते हैं।

३. **क्षमावाणी की भावना** –

कल्पसूत्र में क्षमा की महत्व को विशेष रूप से विवरण किया गया है। पर्युषण पर्व के अंतिम दिन क्षमावाणी का आयोजन होता है,जिसमें सभी एक – दूसरे से "मिच्छामि दुक्कडम् "यह कहकर क्षमा याचना करते हैं। यह क्षमा आत्मा को क्लैशों से मुक्त करने का माध्यम बनती है।

४. **तप और उपवास की प्रेरणा** –

कल्पसूत्र में साधुओं की तपस्याओं का विस्तृत वर्णन श्रावकों को तप के प्रति प्रेरित करता है। पर्युषण के दिनों में अनेक जैन अनुयायि उपवास, एकासन और अन्य व्रतों का पालन करते हैं। इससे आत्मसंयम और आत्मबल वृद्धि होती है।

५. **धर्म का प्रचार और शिक्षा** –

कल्पसूत्र का पाठ जनमानस में धर्म की चेतना जागृत करता है।यह पर्व धर्म प्रचार का एक जीवंत माध्यम बनता है, जहां शास्त्रों का अध्ययन, सत्संग, प्रवचन आदि होते है। कल्पसूत्र के माध्यम से श्रावकों को जैन सिद्धांतों की गहराई से जानकारी मिलती है।

उपसंहार:

कल्पसूत्र में वर्णित पर्युषण पर्व जैन धर्म की आत्मा को प्रकट करता है। यह पर्व केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि एक गहन आत्मिक साधना है,जो संयम,तप, क्षमा और मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करता है। कल्पसूत्र इस पर्व

को एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा के रूप में प्रस्तुत करता है जो व्यक्ति को भीतर से रूपांतरण करने की शक्ति रखता है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पर्युषण पर्व जैन धर्म में धार्मिक और आध्यात्मिक जागृति का अद्वितीय अवसर है, कल्पसूत्र इसका श्रेष्ठ मार्गदर्शक ग्रंथ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

१. जैन धर्म: कहां, क्यों और कब ?लेखक- साध्वी डॉ.विचक्षणश्री, प्रकाशक- श्री तारकगुरू जैन ग्रंथालय गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर)राज.)३१३००१ ।

२. सचित्र श्री कल्पसूत्र,प्रकाशक- पद्म प्रकाशन,पद्मनाभ, नरेला मण्डी, दिल्ली -४०. श्री दिवाकर प्रकाशन,आगरा. प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर. ISBN – 978-81-89698-47-8 ।

३. कल्प-सूत्र प्रवचन,लेखक- गुरु सुदर्शन शिष्य – जय मुनि, प्रकाशक – रविन्द्र जैन जय जिनशासन प्रकाशन ।

४. KALPASUTRA, Editor &Hindi Translator Mahopadhyaya Vinayasagar.Published by D.R.Mehta.Prakrit Bharati Academy 2006.